प्राक्कथन --

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए मेरा मन हिन्दी सन्त साहित्य की ओर आकर्षित हुआ । संत साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन एवं सुदीर्घ है । इसमें अनेकानेक श्रेष्ठ संत विचारक हो गए । इसमें एक ऐसे हिन्दी साहित्य के सीमा स्तम्भ हैं, जिनके विचारों में स्पष्टता है । उनके विचार सत्य और अनुभव से प्रेरित हैं । उनके स्वर में एक क्रांन्तिकारी संदेश था । उनकी भक्ति में एक रचनात्मक सामाजिक स्वरूप था उन्होंने अपनी वाणी की वर्षा से हिन्दी साहित्य की सुषमा को पल्लवित किया । वह सन्त भक्त कवि कबीर हैं । कबीर ने आज से लगभग ५०० वर्ष पहले जो विचार व्यक्त किए हैं, वे आज भी सही प्रतीत होते हैं । उन विचारों की ओर मैं आकर्षित हुआ ।

जब मैंने एम. फिल्. उपाधि की बात सोची तो कबीर को ही प्रथम चुना । यही विचार मैंने हमारे प्रिय, समाजप्रिय और विद्यार्थियों को खास करके हिन्दी प्राचीन साहित्य अध्ययन में प्रोत्साहित करनेवाले आदरणीय गुरुवर्य प्रा. शरद कणाबरकरजी से चर्चा की । उन्होंने अनुमति तो देही दी, इतना ही नहीं, बल्कि एक सुनिश्चित दिशा में मार्गदर्शन भी किया ।

प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्न प्रश्न थे --

(१) सन्त कबीर के जीवन का एवं उनकी वाणी का सूक्ष्म परिचय कैसा होगा ?

(२) संतों की परम्परा, संतों की परम्परा का विकास कैसा रहा होगा ? संतों के विचारों ने समाज को किस प्रकार प्रभावित किया होगा ?

(३) कबीर-कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक परिस्थितियाँ कैसी रही होंगी ? जिन्होंने समसामयिक साहित्य को प्रभावित किया होगा ।

(४) ' प्रो.पुष्पपालसिंह द्वारा संपादित ' कबीर ग्रंथावली में अभिव्यक्त कबीर के सामाजिक विचार ' के अंतर्गत तत्कालीन आचार - विचार का चित्रण कैसा किया गया है ? तत्कालीन समय में सामाजिक व्यवस्था किस तरह की थी ? कबीर ने धर्माचरण संबंधी चित्रण किस प्रकार किया गया है ? कबीरदास ने नारी के संबंध में भले-बुरे विचार किस प्रकार व्यक्त किए हैं ? कबीर ने सामाजिक, धार्मिक, और व्यक्तिगत रूढियों की आलोचना किस प्रकार की है ? कबीर का विचारक रूप कैसा है ?

मेरे प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध की निम्न प्रकार रूपरेखा बनायी और काम में जुट गया ।

अध्याय पहला --

कबीर का जीवन एवं कबीर वाणी का परिचय ।

अध्याय दूसरा --

संतों की परम्परा ।

अध्याय तीसरा --

कबीर - कालीन परिस्थितियाँ ।

अध्याय चौथा --

' प्रो.पुष्पपाल सिंह द्वारा संपादित ' कबीर ग्रंथावली में अभिव्यक्त कबीर के सामाजिक विचार --

अ) नारी विषयक कबीर के विचार ।

ब) कबीर का धर्माचरण संबंधी चित्रण और उनका सहज धर्म ।

क) सामाजिक, धार्मिक, और व्यक्तिगत रूढियों की आलोचना ।

ड) कबीर का विचारक रूप ।

उपसंहार --

लघु शोध-प्रबन्ध के अन्त में मैंने संदर्भ ग्रंथों की सूची दी है । प्रस्तुत प्रबन्ध श्रध्देय गुरुदेव प्रा. शरद कणबरकरजी की कृपा का फल है । प्रा.कणबरकर जी ने विषय की बारीकियों,कठिनाइयों को समझाया अनेक व्यस्तताओं के बावजूद उन्होंने जो अनमोल मार्गदर्शन किया, अनगिनत गलतियों को सुधारा सँवारा,बार-बार मुझे प्रोत्साहित किया, इसके लिए मैं उनका अत्यधिक ऋणी हूँ ।

मैं यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद मेरे साथ रहेगा ।

श्रध्देय डॉ. व्ही. व्ही.द्रविडजी, डॉ. व्ही.के.मोरे जी ,डॉ.के.पी.शहा जी, प्रा.रजनी भागवत जी ,प्रा. तिवले, तथा प्रा.वेदपाठक के प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूँ । प्राचार्य, बी.ए.पाटील, प्राचार्य डॉ.गुन्डे, डॉ.गो.रा. कुलकर्णी, प्रा.कडलास्कर जी ,प्रा.नांद्रे जी, प्रा. एन. एच.पाटील जी,श्री अशोक पाटील जी के स्नेह पूर्ण आशीष के लिए भी मैं उनका आभारी हूँ ।

अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देनेवाले और जिनके आशीर्वाद के बिना यह शोध कार्य असंभव था वे मेरे पूज्यवर माता-पिता, स्नेहसागर बड़े भाई का भी मैं आभारी हूँ । मेरे छोटे भाईयों और बहन का भी मुझे अच्छा सहयोग मिला । मेरे सहपाठियों और मित्रों का भी मैं आभारी हूँ, जिनकी शुभकामनाएँ इस कार्य के साथ रहीं ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल जे.बी.जाधव जी के प्रति आभारी हूँ । टंकलेखनिक श्री बालकृष्ण रा.सावन्त,कोल्हापुर ने उत्तम टंकलेखन कर दिया इसलिए मैं उनका भी आभारी हूँ ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ अवलोकन के लिए सम्मुख रखता हूँ ।

शहाजहान महेबूब मणेर
शोध-छात्र

कोल्हापुर ।
दिनांक :२६:५:१९९२ ।